JIWAJI UNIVERSITY
GWALIOR (M.P.)

Class – M.A. (Hindi)

Semester – 2nd

Subject – Hindi

Submitted By:- Dr. Sangeeta Chouhan

- प्रेमचन्द से समकालीन कहानीकार – प्रेमचन्द जी के समकालीन कहानीकारों में प. विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', सुदर्शन , जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, रायकृष्णदास, पाण्डेय बेचल शर्मा 'उग्र', जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल आदि उल्लेखनीय है।
- कौशिक जी की प्रथम कहानी 'रक्षाबंधन' सन् 1912 में ही प्रकाशित हो चुकी थी तथानि उनकी कहानी कला में निखार बाद में ही आया। उन्होने लगभग 200 कहानियॉ लिखी है जो 'गल्प मन्दिर', 'चित्रशाला', 'प्रेम प्रतीमा', 'मणिमाला' है और 'कल्लोल' संग्रहो में संकलित है। उनकी कहानियों का विषय प्रायः सामाजिक समस्याओ दहेज प्रथा, दर्दा प्रथा, बाल विवाह एवं अन्धविश्वास आदि से जुडा हुआ है। 'ताई', 'रक्षा बंधन', 'विधवा', 'कर्तव्य बल', 'बिद्रोही', 'कर्तव्य बल', 'बिद्रोही', 'पतिपावन', उनकी प्रसिद्ध कहानियॉ है।

सुदर्शन ने अपनी कहानियों का विषय जीवन की ज्वलन्त समस्याओ का बनाया है। उनके कहानी संग्रहो के नाम है – 'सुदर्शन सुधा', 'सुदर्शन सुमन', 'पुष्पलता', 'सुप्रबात', 'तीर्थयात्रा', 'गल्य मंजरी', 'परिवर्तन', 'वनघट', 'हार की जीत', 'कवि की स्त्री', प्रेम तरू', 'दो मित्र', 'पत्थरों का सौदागर' और 'कमल की बेटी' आदि। उनकी कहानी सुधारवादी प्रधानता युक्त होती थी।

- प्रेमचन्द युग के एक प्रतिभाशाली कथाकार के रूप में श्री जयशंकर प्रसाद का नाम लिया जाता है। उनके पॉच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है। छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, ऑधी और इन्द्रजाल कुल मिलाकर 69 कहानियॉ इन संकल्पों में संकलित की गई है।

उनकी कहानियों में ऐतिहासिक देशकाल एवं वातावरण की सफल प्रस्तुति की गई है।

कहानियो में अनूभूति की तीव्रता काव्यात्मकता, प्रेम चितूष, प्रकृति निरूपण एवं कल्पना विद्यमान है। अतीत गौरव, स्वप्निल भावुकता एवं कल्पना की ऊँची उडान उनकी कहानियों की विशेषता मानी जा सकती है प्रेम, करूणा, त्याग, बलिदान, इनकी कहानियों के विषय है। उन्होने उच्चकोटि के नारि चरित्र अपनी कहानियों में प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रसाद का कहानियॉ है – पुरस्कार, इन्द्रजाल, आकाशदीप, ममता, मधुवा, देवस्थ, बेडी, प्रतिध्वनि, ऑधी, सालवंती आदि।

- आचार्य चतुर सेन शास्त्री – इन्होने ऐतेहासिक विषयों पर मार्मिक कहानियों की रचना की 'अबपालिका', 'भिक्षुराज', सिंहगढ विजय', पन्नाधाय, रूठी रानी, दे खुदा की राह पर, आदि उनकी प्रमुख कहानियॉ है। रामकृष्णदास जी प्रसाद परम्परा के कहानी लेखक है। उनकी कहानियों में कवित्वपूर्ण वातावरण और नाटकीयता विद्यमान है। अन्तः पुर का आरम्भ में इन

तत्वों को देखा जा सकता है।

- उपेन्द्रनाथ अश्क ने मध्यमवर्गीय जीवन से अपनी कहानियों के विषय चुने है। समाज की कुरीतियों, आन्दोलनो एवं कुण्ठाओ को भी उनकी कहानियों में अभिव्यक्ति मिली है। इनमें की उनका मार्क्सवादी दृष्टिकोण है तो कही व्यक्ति मूलक चेताना एवं नोविश्लेषण की प्रवृत्ति है।

अश्क जी ने प्रमुख कहानी संग्रह है – 'नशानियॉ' और 'दोधारा'।

- भगवती प्रसाद वाजपेयी ने लगभग तीन सौ कहानियॉ लिखी जिनमें सामाजिक यथार्थ का चित्रण हुआ है। इन कहानियों में विषय वैविध्य है। अछूत समस्या, विधवा विवाह, वेश्या समस्या जैसी अनेक समस्याओं को इन कानियों मे उठाया गया है तथा यथार्थवादी चरित्रों के प्रति रूझाान दिखाई पडता है।

प्रेमचन्द युगीन कहानीकारो में पाण्डेय बेचेन शर्मा 'उग्र' एक उल्लेखनीय कथाकार है। उनकी कानियों के अनेक संकलन प्रकाश में आए है। चिन्गाारियां, शैतान मण्डली, बलाकार, इन्द्रधनुष, चाकलेट, दोजया की आब आदि। सामाजिक यथार्थ को नग्ल रूप में पेश करने में वे सिद्धध्स्त कथाकार माने जा सकते है। इन कहानियों में कुरितियों में सामाजिक शोषण, आक्रोश व्यक्त किया गया है।

- राधिकारमण प्रसाद सिह की भी कई कहानियॉ इस काल में प्रसिद्ध हो चुकी थी।'कानो में कंगन, दरिद्रनारायण और पैसे की घुघनी उनकी प्रसिद्ध कहानियॉ है। इनका संकलन 'गॉधी टोपी' नामक संग्रह मे किया गया है। अस काल के कुछ अन्य कहानिकार है– राहुल सांकृत्यायन (सतनी के बच्चे), सुभ्रदाकुमारी चौहान (बिखरे मोती एवं जन्मादिनी संग्रह), शिवरानी देवी कौमदी, उषा देवी मित्रा, चन्द्रगुप्त विधालंकार, विष्णु प्रभाकर आदि।

- उपयुर्क्त विवेज्ञन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द युग में कहानी ने अपनी स्वरूप को सॅवारने एवं निखारने का काम किया उसके विषय वैविध्य एवं शिल्प सजगता का विकास हुआ। यदि इस काल की कहानियों एवं कहानियों ा वर्गीकरण करे तो उन्हे तीन वर्गो में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में अन्तर्मुखी परम्पराके कहानीकार है जिनका प्रतिनिधित्व करते है। जयशंकर प्रसाद द्वितीय वर्ग में बहि र्मुखी परम्परा के कथाकार है। जिनके प्रतिनिधि है– प्रेमचन्द तृतीय वर्ग मे मध्यवर्ती परम्परा के कहानी लेखक है जिनका प्रतिनिधित्व सुदर्शन करते है। इस काल की कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओ का चित्रण प्रधान रूप से हुआ है। व्यक्ति चरित्र एवं नारि को इस काल में प्रमुखता दी जाने लगी थी तथा शैली एवं शिल्प की दृष्टि से कहानी प्रोढता प्राप्त कर रही थी भाषा की दृष्टि से भी इस युग की कहानियॉ उल्लेखनीय है। प्रेमचन्द की भाषा में सपार बयानी सादगी, लोकोक्तियों

एवं मुहावरो का सही प्रयोग तथा पात्रानुकूलता जैसे गुण विद्यमान है।

ग – प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी (सन्1936ई. से 1950 ईतक)

- सन् 1936 ई. से सन् 1950 ई तक का समथ हिन्दी कथा जगत में प्रेमचन्दोत्तर कहानी काल के रूप में जाना जाता है। प्रेमचन्दोत्तर कहानी काल के रूप में जाना जाता है प्रेमचन्दोत्तर कहानी किसी एक दिशा की ओर अग्रसर नही हुई अपितु विविध दिशाओ में उसका विकास हुआ। कहानी इस काल की केन्द्रीय विद्या रही है अतः उसने जीवन और जगत के विविध पक्षों को अपनी परिधि में समेटने का प्रयास किया है। अस काल में उक ओर प्रगतिवादी विचारधारा से अनुप्रमाणित कहानीकारो ने प्रगतिवादी कहानियॉ लिखी तो, दूसरी और मनोविश्लेषणपरक कहानीकारो ने ऐसे विषयों पर कहानियॉ लिखी जिनमें व्यक्ति मन की आन्तरिक परतो को खोलकर देखा गया था। प्रगतिवादी कभाकारो में सर्वप्रमुख है – यशपाल, जिन्होने मार्क्सवादी

चेतना से अनुप्रणित होकर अनेक कहानियॉ कि। वर्ग संघर्ष, शोषण सामाजिक एवं नैतिक रूढियो पर आक्रोश उनकी कहानियों के विषय रहे है। यशपाल की लिखी कहानियों के कई संग्रह प्रकाशित हुए है, जिनमें प्रमुख है 'वोदुनिया', 'पिंजडे की उडान', 'फूलो का कुर्ता', 'तर्क का तूफान' एवं 'चक्कर क्लब' आदि। यशपाल जी की कथा शिल्प पर टिप्पणी करते हुए भगवतस्वरूप मिश्र ने लिखा है – कथा शिल्प और कथ्य की दृष्टि से यशपाल जी प्रेमचन्द की तरह समस्या का समाधान देने वाले किसी आदर्श बिन्दु पर नही पहुॅचते अपितु यथार्थ की कठोरता के तीखे व्यंग्य का बोध भर करा देते है। रांगेय राघव, नागार्जुन, अमृतराय, मन्मथनाथ गुप्त इसी परम्परा के अन्य कथाकार है।